टोकरी में दिगंत: थेरी गाथा: एक विवेचन

समकालीन कवयित्री अनामिका जो कि वर्ष 2020 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया है। इस पुरस्कार से सम्मान प्राप्त करने वाली ये पहली महिला कवयित्री हैं। 'टोकरी में दिगंत: थेरी गाथा' पुस्तक पढ़ने मात्र से ही उनकी प्रतिभा का आंकलन किया जा सकता है। यह कृति शिल्पगत व विषयगत दोनों स्तरों पर क्रांतिकारी परिवर्तन करती है। अपनी समकालीन कवयित्रियों में अनामिका जी का कृतित्व अपनी अलग पहचान रखता है। उनका विषय स्त्री अस्मिता से जुड़ा है, परन्तु उनके लेखन में विद्रोह का स्वर हिंसक नहीं है। सौम्य शब्दों के चयन द्वारा वे अपनी बात पाठक के हृदय तक इस प्रकार पहुंचाती है जिसमें आक्रोश न होकर प्रेम, करूणा व सम्वेदना का आग्रह होता है।

चाहती हूँ विस्फोट
एक प्रज्ञावान, प्रतिबद्ध, अहिंसक
किन्तु अटल व सामुहिक विस्फोट

अनामिका जी की दृष्टि स्वं के बन्धन से ऊपर उठती है। पुरूष को अपना प्रतिद्वन्द्वी न मानकर सहयोगी मानने का आग्रह उनके लेखन में है। अनामिका जी उन सभी पुरूषों का अभिवादन करती है जो महिलाओं की प्रगति में सदैव प्रयासरत रहे। लेखिका की कुछ पंक्तियाँ-

राममोहन राय, ईश्वरचन्द, कार्वे
राणाडे, ज्योतिबा फुले
पण्डिता रमा बाई, सावित्रि बाई
मुझसे मिलने आए
उन्होने मेरा माथा सहलाया (तिलोत्तमा थेरी)

यह कृति थेरियों की गाथाओं के माध्यम से आज के समय की स्त्रियों के जीवन में सुख-दुख को प्रस्तुत करती है, जिसमें स्त्रियाँ बुद्ध से संवाद करती है। बुद्ध अनेक कविताओं के केन्द्र में है जिसमें थेरियां प्रश्न करती है। बुद्ध में उन्हें अपना सखा नजर आता है, एक आदर्श पुरूष जिसमें स्त्री की मासँलता की अपेक्षा उसके बौद्धिक व रचनात्मक विकास को महत्व दिया। बुद्ध ने न बिखरने दिया उसका आत्मसम्मान जिसे वह देखती रही पूरे जीवन बिखरते।

वे स्त्रियाँ जो स्वयं का दमन स्वीकार नहीं कर सकी थेरियाँ बन गई। पर क्या रोक नहीं सके उन्हें पुरूष? शायद नहीं वरना उनका पुरूषत्व हार जाता जैसे रत्नावली की एक घुड़की को तुलसीदास सह नहीं पाए। रत्नावली जिसने न जाने कितनी घुडकियाँ सुनी होगी पर वो ना त्याग सकी न घर, ना संसार। उसमें कहां था वह दंभ उसमें थी तो बस कोमलता और माँसलता।

माँसलता उस नन्हे कबूतर की
राजा शिवि तक जो आया था
बाज का खदेड़ा हुआ

अद्भुत है अनामिका जी का लेखन जो हजारों सदियों को पाटता हुआ आम्रपाली तक जाता है और पुनः ट्रेफिक लाइट पर आकर रूक जाता है। उनकी कल्पना शक्ति व सूक्ष्म दृष्टि के साथ इतिहास का अद्भुत ज्ञान दुर्लभ है। उनकी भावों की सरलता व सहजता इस प्रकार प्रभावित करती है कि उनका विद्रोह भी विनम्र आग्रह लगता है। उनकी उपमान की छटा अद्भुत है।

हड़बड़ में बस के पायदान पर छूटी गठरी
मेरे वजूद की
उँगलियों से मैने बालों की गाँठे निकाली
और बाँध लिया
इखरी-बिखरी यादों का जुड़ा

उनकी रचना में न केवल स्त्री जगत अपितु समस्त संसार के कल्याण की भावना समाहित है।

रह जाएगी करूणा, रह जाएगी मैत्री

उनकी यह रचना छोटे-छोटे चित्र दृश्य, प्रसंगों व थेरियों के रूपको में लिपटी दास्तान है। उनका विषय उच्च पदों पर आसीन सफल महिलाऐं न होकर सामान्य वर्ग की महिलाओं की समस्या है। थेरियां बुद्ध के पास आई। बुद्ध ने उन्हें शरण तो दी पर ये कहकर कि पहले यह संघ जितने लम्बे समय तक कायम था, अब उसके आधे समय ही कायम रहेगा। बुद्ध जैसे सम्बुद्ध पुरूष ने ऐसा क्यों कहा, इसका जवाब थेरियों के एक समूह से उन्हें प्राप्त हुआ। बुद्ध को अविश्वास स्त्रियों पर नहीं अपितु पुरूषों के निग्रह पर था। स्त्री को सखा व समकक्ष समझने वाले पुरूष आज भी कम है।

प्रकृति ने उन्हें पाश्विक बल तो दिया पर आत्मबल व आत्मनिग्रह नहीं। 'कब्जे की चीज' हुए स्त्रियाँ थक गई हैं इसलिए बुद्ध जैसे पुरूष उन्हें अच्छे लगते हैं।

एक उड़ा मोक्ष को
एक यहीं मोह में स्वाहा